6 नवभारत टाइम्स, मुंबई, 21 जुलाई 2012

NBT
नवभारत टाइम्स

सप्ताह का इंटरव्यू

जशवंत बी. मेहता

सुपरिचित आर्किटेक्ट और कंसल्टिंग इंजीनियर **जशवंत बी. मेहता** राष्ट्रपति द्वारा संचालित लोकतंत्र प्रणाली की अवधारणा को देश में लोकप्रिय बनाने के अभियान में जुटे हैं। इसके लिए उन्होंने 'फोरम फॉर प्रेजिडेंशल डेमोक्रेसी' नामक एक रजिस्टर्ड पार्टी की स्थापना की है तथा कई पुस्तकें भी लिखी हैं। प्रस्तुत हैं उनसे **सरोज त्रिपाठी** की बातचीत:

राष्ट्रपति प्रणाली से हमारे देश में सुधार होगा

आपको भारत में राष्ट्रपति प्रणाली की जरूरत क्यों महसूस होती है?

हमारी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था की कई खामियों के कारण जनता में लगातार निराशा और असंतोष बढ़ता जा रहा है। ब्रिटेन से उधार ली गई इस संसदीय प्रणाली ने ऐसे स्वार्थी नेताओं को घृणित कौम पैदा की है जिन्होंने जनता के हितों को ताक पर रख दिया है। इस प्रणाली ने चुनाव में संदिग्ध धन संग्रह के नित्य नए तरीकों, राजनीति के अपराधीकरण तथा राजनेताओं व सरकारी अफसरों के अनियंत्रित भ्रष्टाचार को जन्म दिया है। राज्य व केंद्र में सरकारों की लगातार अस्थिरता, मंत्रिमंडल में बार-बार फेरबदल और विश्वसनीय नेताओं की कमी आदि से हमारी वर्तमान प्रणाली में जनता की आस्था डगमगा गई है। अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस व आस्ट्रेलिया इत्यादि देशों के संविधान का अध्ययन करने से ऐसा लगता है कि भारत में बेहतर शासन के लिए कुछ संशोधनों के साथ राष्ट्रपति प्रणाली ही उचित साबित होगी।

राष्ट्रपति प्रणाली के क्या फायदे हैं?

इसके कई ऐसे फायदे हैं जिन्हें नकारा नहीं जा सकता- जैसे इसकी स्थिरता, सर्वोच्च प्रोफेशनल्स की मंत्रिमंडल में सीधी नियुक्ति, मंत्रिमंडल से विधायिका को अलग करना तथा पार्टी प्रणाली को विशेष प्रोत्साहित न करने की नीति। इसके अतिरिक्त मेयर से लेकर गवर्नर तथा राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद के लिए किए जाने वाले सीधे चुनाव की प्रक्रिया के कारण सुयोग्य और मेधावी व्यक्तियों का नेतृत्व पद

> **इस सिस्टम के कई फायदे हैं जैसे इसकी स्थिरता, सर्वोच्च प्रोफेशनल्स की मंत्रिमंडल में सीधी नियुक्ति, मंत्रिमंडल से विधायिका को अलग करना तथा पार्टी प्रणाली को विशेष प्रोत्साहित न करने की नीति। सीधे चुनाव की प्रक्रिया के कारण सुयोग्य और मेधावी व्यक्तियों का निर्वाचन अधिक सुगम रीति से संभव होता है।**

के लिए निर्वाचन अधिक सुगम रीति से संभव होता है।

आपको अमेरिकन प्रणाली भारत के लिए ज्यादा अनुकूल क्यों नजर आती है?

अमेरिकी संविधान निर्माताओं ने स्थिरता को ध्यान में रखकर संविधान बनाया था। उन्होंने महसूस किया कि वहां फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन आदि अलग- अलग यूरोपीय देशों के लोग आकर बसे हैं। सभी अपनी-अपनी राजनीतिक पार्टियां बनाएंगे। इससे देश में अस्थिरता आएगी। अमेरिकी संविधान निर्माताओं का देश में अस्थिरता का भय हमारे यहां सत प्रतिशत कालत्रिक साबित हो रहा है। भारत में धर्म, जाति, क्षेत्र और भाषा के आधार पर राजनीतिक पार्टियां बन गई हैं। इससे पूरे देश में अस्थिरता का माहौल बन गया है। विकास रुक गया है।

सरकार की स्थिरता पर इतना जोर क्यों?

सरकार की स्थिरता के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि सरकार में अच्छे तथा नॉलेजेबल लोग भी हों। उन पर समुचित चेक होना चाहिए। हमारे देश में तो लोकतंत्र का मतलब राजनीतिज्ञों का, राजनीतिज्ञों के द्वारा और राजनीतिज्ञों के लिए हो गया है। जनता की भूमिका वोट डालने तक सीमित हो गई है। इसके बाद यह राजनीतिज्ञों के कठपुतली की तमाशबीन बन कर रह जाती है। फिलहाल देश में लोकतंत्र है ही नहीं।

लेकिन भारतीय समाज की विविधता जैसे कि पूर्वोत्तर भारत, आदिवासी भारत और जाति व्यवस्था अमेरिकी समाज की सचाई से बिल्कुल अलग है?

देश की इन सभी समस्याओं की जड़ मिस गवर्नेंस है। यदि गुड गवर्नेंस होती तो आज इन समस्याओं का अस्तित्व ही नहीं होता। इस प्रणाली में स्थानीय स्तर का नेतृत्व उभर ही नहीं पाता। यदि मेयर से लेकर गवर्नर तक का प्रत्यक्ष चुनाव हो तो मजबूत जनाधार वाले राष्ट्रीय स्तर के नेता उभरेंगे। देश की वर्तमान संसदीय प्रणाली जाति व्यवस्था को प्रोत्साहित कर रही है। लोग जाति के आधार पर ही चुन कर नेता बन रहे हैं। यदि राष्ट्रपति का निर्वाचन पूरे देश की जनता करेगी तो नैरो विजन वाला व्यक्ति चुना ही नहीं जाएगा। इससे जातिवादी राजनीति को प्रोत्साहन मिलना बंद हो जाएगा और धीरे-धीरे जाति आधारित राजनीति गुजरे जमाने की बात बन जाएगी।

आप किस आधार पर यह कह रहे हैं कि प्रोफेशनल राजनीतिज्ञों के बजाय प्रोफेशनल बुद्धिजीवियों से गठित मंत्रिमंडल ज्यादा अच्छा होगा?

मंत्रिमंडल में प्रोफेशनल और साफसुथरी छवि वाले बुद्धिजीवी होने चाहिए। वर्तमान प्रणाली में अच्छा आदमी भी कुछ नहीं कर सकता। हमारे वर्तमान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। इस प्रणाली में निर्वाचित प्रधानमंत्री के हाथ बंधे होते हैं। उस पर कई तरह के दबाव होते हैं। प्रत्यक्ष निर्वाचित राष्ट्रपति के आत्मविश्वास का स्तर काफी ऊंचा होगा। अपने मंत्रियों के चयन में उसे पूरी स्वतंत्रता होगी। शासन पद्धति में इससे निश्चित तौर पर सुधार होगा। वर्तमान प्रणाली में तो सुधार की कोई गुंजाइश ही नहीं है। प्रोफेशनल्स बुद्धिजीवी भ्रष्ट न हों, इसलिए चेक और बैलेंस जरूरी है।